वेदों की खुशबू

ओ३म्

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 65	Year 6	Volume 13	October 2017 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

वैदिक धर्म ही क्यों ?

आज विश्व अशान्त है, नित्य तरह तरह के विवाद और समस्याओं से घिरा हुआ है। वैसे भौतिक रूप से बहुत उन्नति हो रही है, सुख सम्पन्नता बढ़ रही है। विज्ञान की नई–नई उपलब्धियां मानव को प्राप्त हो रहीं हैं और अभी भी खोज का क्रम रूका नहीं जारी है, परन्तु शान्ति नहीं है। मानव का मानव से टकराव बढ़ता जा रहा है।

भय, अशान्ति, असुरक्षा, घुटन अस्थिरता का तेजी से प्रभाव बढ़ता जा रहा है। मानव जाति अपने मूल उददेश्य से भटक रही है।

आखिर यह सब क्यों हो रहा है? इसके पीछे क्या कारण हैं?

आज समस्त मानव जाति को इन प्रश्नो पर सोचना और उसका उपाय भी ढूंढना होगा। अन्यथा सब सुख सुविधा और साधनों के होते हुए भी जीवन कष्टमय ही रहेगा। हैरानगी इस बात की है, इन समस्याओं की गहराई में जब जाते हैं, तो जो कारण उभर कर सामने आते हैं, वे हैं धर्म व ईश्वर। क्यू हो रहा है ऐसे?

अलग– अलग धर्म , अलग अलग ईश्वर की कल्पना ने मानव से मानव को दूर कर दिया है। ईश्वर एक है पर उसकी कल्पना अलग अलग ढंग से कर रहे है और यही चीज मानव को मानव से लड़ा रही है और दूर कर रही है। धर्म के सच्चे स्वरूप से हटकर हम अनेक मान्यताओं में उलझ कर रह गये हैं। संसार में आज हर जाति, हर समूह अपने संगठन, अपनी पार्टी, अपने सम्प्रदाय के अस्तित्व को बढ़ाने के प्रयास मे लगा हुआ है। अपने को दूसरे से श्रेष्ठ व दूसरे को छोटा बताने में लगा हुआ है। इस कारण एक दूसरे की विचारधारा के विरूद्ध कटुता बढ़ती जा रही है, सब की राह अपनी – अपनी है व एक

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2016-2018

साथ चलने को तैयार नहीं हैं। यही आपसी टकराव, अशान्ति का कारण बन गया है।

जब की धर्म तो शाश्वत है, सब के लिये एक समान है। सभी कालों में उसकी स्थिति एक समान रहती है। किसी भी स्थान पर धर्म का स्वरूप बदलता नही हैं। धर्म की कोई भगौलिक सीमा नहीं है। धर्म के गुण भारत हो या फिर अमेरिका एक ही है। यही नहीं जो धर्म के गुण रामायण काल में थे वही आज है। इसलिए धर्म सनातन है व जाति, भाषा, स्थान, मजहब व सम्प्रदायों से उपर है।

यह भी सही है कि सुखस्य मूलं धर्मः——सुख का आधार धर्म ही है। धर्म ही हम सब को संगठित और सुरक्षित रख सकता है। इस कारण हमें धर्म के सम्बन्ध में ऐसी कोई विचारधारा ढूढनी होगी जो मानव विचारों से उपर हो।

ऐसे पक्ष की जब खोज करेगें तो एक ही निष्कर्ष पर पहुंचेगे वह है वैदिक मार्ग जो मानविय ज्ञान का स्रोत है वही मानव की प्रत्येक इच्छा को पूरा करने में सक्षम है। यही ईश्वरीय ज्ञान है जिसे हम वैदिक धर्म भी कह सकते है। विश्व शान्ति का सूत्र यदि हो सकता है तो यह वैदिक धर्म ही हो सकता है। इसका कारण समझना ज़रूरी है।

वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान। जिस प्रकार ज्ञान किसी जाति,सम्प्रदाय, देश, काल से बंधा हुआ नहीं है वैसे ही वेद है। वेद किसी मनुष्य का ज्ञान नहीं है। आज धर्म के नाम पर अलग–अलग विचारधारों में विश्वास होने के कारण एक दूसरे की बात कोई मानने को तैयार नहीं। कुछ विचारधारा वाले अपनी मान्यता को जबरदस्ती दूसरों पर थोपना चाहते हैं। किसी का दिल दुखाकर, मजबूर करके व लालच देकर धर्म को फैलाना चाहते हैं। किन्तु यह ठीक नहीं, यह अधर्म है।

वेद किसी मनुष्य या जाति अथवा देश की देन नहीं है। यह सृष्टि के प्रारम्भ में मानव को उस ईश्वर की प्रथम संस्कृति व ज्ञान के रूप में तोहफा है। जिस प्रकार से सूर्य, चन्द्रमा, तारे, भूमी, जल, वायु सब परमात्मा ने सब के लिये दिये हैं, उसी प्रकार वेद ज्ञान सभी के लिये है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सवे सन्तु निरामयाः। सब जगह सुख शान्ति का वास हो व वसुधैवकुटुम्बकम ——सारा विश्व एक परिवार है ऐसे महान सन्देश तो वेदो से ही प्राप्त हुये हैं। मर्नुभव के सन्देश द्वारा वेद मनुष्य बनने का सन्देश दे रहा है न कि हिन्दु , मुसलमान या ईसाई बनने का। इसलिये यह कहना बिल्कुल सत्य है कि वेद धर्म का मूल हैं।

इसलिये वेद का संदेश ही ऐसा है जिसे संसार का हर व्यक्ति मान सकता है क्युकिं वेद का ज्ञान किसी जाति,सम्प्रदाय, देश, काल से बंधा हुआ नहीं है सब के लिये है व सर्वभौमिक है।

उदाहरण के लिये मनुर्भव जनया दैवं जनम——ऐ दुनिया के लोगो मनुष्य बन जाओ व दूसरों को भी वैसा ही बनाओ, को मानने में किसी को भी परेशानी नहीं हो सकती है। चाहे वह हिन्दु है या मुसलमान या फिर ईसाई या और किसी मजहव को मानने वाला ।

इस में सब की उन्नति है, सब को सुखी बनाने व पूर्ण मानव बनाने का संदेश है। सब से बड़ा ज्ञान स्त्रोत व विज्ञान का भण्डार भी यही वेद है। वेद के अनुसार यदि मनुष्य अपने मानवीय गुणों को समझकर उन्हें धारण कर ले, तो सारी समस्याओं का ही अन्त हो जाये। क्या हैं यह बाते? मनुष्य सत्य और असत्य को विचार कर अपना कार्य करे। क्या उचित है,क्या अनुचित है उसका मनन करे, परोपकार का जीवन ही व्यवहार में हो। अपने पर आश्रित व कमजोरों की सहायता के भावों से पूर्ण हो जायें। यही धर्म है व यही बात वेद कहता है।

आत्मनः प्रतिकूलनि परेषां न समाचरेत

अपनो को जो व्यवहार अच्छा लगता है वैसा दूसरो से और जो अपने को अच्छा नहीं लगता वह दूसरो से कदापी न करे। इस विचारधारा से ही विश्व सुख शान्ति की प्राप्ति कर सकता है। ऐसा सन्देश जो सब को माननीय हो वह वेदों में ही है क्योकिं इस ज्ञान का मख्य उदेश्य मनुष्य को सही माने में मनुष्य बना कर उस में ऐसे गुणों को धारण करने की प्रेरणा देना है जो की सब में प्रेम व बन्धुत्व पैदा करता है और यही विश्व में शान्ति ला सकता है। आज आवश्यकता है संसार को इस पवित्र सन्देश से परिचित करवाने की। जो इसे जान चुके हैं उनका नैतिक दायित्व है कि वे दूसरों को भी इससे परिचित करवायें।

प्रकाश आर्य

असली मित्र कोन है ?

नीला सूद

एक बार एक अच्छा व्यक्ति निर्दोष होने के बावजूद अदालत में दोषी होने के कगार पर आ गया। उसके वकील ने उसे कहा कि अदालतें तो सबूत व गवाह मांगती है। अगर तुम्हारे पास गवाह है तभी बचाव हो सकता है।

उस व्यक्ति के तीन बहुत घनिष्ठ मित्र थे, जिन पर उसे बहुत भरोसा था । पहले वह उस के पास गया, जिसे वह सब से घनिष्ठ मानता था, उसने कुछ हमदर्दी के शव्द कहकर अपना पीछा छुड़वाया। जब दूसरे के पास गया तो उसने कहा—मित्र अगर कुछ धन चाहिये तो मैं दे सकता हूं पर इन कोर्ट कचहरी के चक्करों में नहीं पड़ना चाहता। हताश वह आखीरकार तीसरे मित्र के पास गया। उसने बात सुनी तो खुशी से न्यायधीश के पास गवाह बनकर जाने को तैयार हो गया।

इसी तरह अपनी ज़िन्दगी में भी हम अपने तीन मित्रों पर बहुत भरोसा कर के चलते हैं। सब से बड़ा मित्र हम अपनी जायदाद व धन दौलत को मानते हैं पर यह मित्र न तो हमें मृत्यु से बचा सकता है और न ही जब बुढ़ापे के कारण अंग काम करने बन्द कर देते है, तब सहायक होता है। हमारे सगे सम्बन्धी हमारे दूसरे मित्र की तरह हैं, वे शम्शान भूमी तक ही साथ चलेगें। हमारे तीसरे मित्र हैं, अच्छे कर्म जो कि मृत्यु के पश्चात भी हमारे साथ रहकर हमारे अगले जन्म को सुधारेगें। यही मित्र है जिस पर हम भरोसा कर सकते है।

हम पुराणों में पढ़ते है कि धर्मराज ने हमारे अच्छे व बुरे कर्मो का खाता रखा होता है, यदि अच्छे कर्म बुरे कर्मो से अधिक हों तो मानव योनी मिलती है वरना बाकी 1,86000 में से किसी एक योनी में, हमारे कर्मो के अनुसार जन्म होता है। चाहे यह 186000 योनीयों की बात केवल ऐक ढकोंसला हो पर जो बात सीखने वाली है वह यह है कि मनुष्य योनी बहुत कीमती है व यह तभी नसीब होती है जब हमारे कर्म अच्छे होंगे। कर्म अच्छे तब होते हैं जब हम पापपूर्ण प्रवृति को हमारे मन में पैदा न होने दें। यह तभी सम्भव है जब हम ईश्वरिय गुणों को धारण करे। ईश्वरिय गुण हैं —दया, करुणा, विनम्रता, सहनशीलता, सन्तोष, धैर्य, संवेदनशीलता, सत्य के मार्ग पर चलना, उदारचित होना, निर्भय रहें और ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखें और अपने आप को पांच शत्रुओं काम कोद्ध लोभ मोह अंहकार से दूर रखें।

श्रेष्ठकर्म करते हुए जीने की इच्छा करना भारतीय जीवदर्शन है। 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेत' हे मनुष्यो ! पुरूषार्थी और कर्मशील बनो।

कर्मो से मनुष्य देवता बनता है, कर्मो से ही मनुष्य राक्षस बन जाता है। यह संसार कर्म की खेती है। जो जैसा बोता है वैसा कांटता है। जैसा बीज वैसा फल। जैसी करनी वैसी भरनी। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। जीव कर्मानुसार जगत में आता है और उसी के अनुसार फल भोगकर चला जाता है। अकेला आता है और अकेला ही चला जाता है। जो इन्सान कर्म करता है, उसी के आधार पर जाति,आयु तथा भोग प्राप्त होते हैं।

हमने कर्म कैसे किये इसका मूल्यांकन तो हम खुद

कर सकते हैं। रात को सोने से पहले बिस्तर पर बैठ कर पांच मिनट के लिये सोचिये आज का दिन कैसा बीता। हमने अपने आप से दो प्रश्न पूछने हैं। पहला—क्या मैने कोई ऐसा कार्य तो नहीं किया जिससे दूसरे के मन को ठेस पहुंची हो? दूसरा——क्या मैने कोई ऐसा कार्य किया जिससे दूसरे का जीवन बेहतर हो गया हो?

किसी सन्त से मैने उपदेश में सुना था कि हम मनुष्यों को तीन श्रेणीयों में बांट सकते हैं। पहली श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो अपने को कष्ट में डाल कर भी दूसरों को सुख पहुंचाते हैं। इन्हे हम देवता कहते हैं। दूसरी श्रेणी में वे आते हैं जो काम करते हुये यह ध्यान रखते हैं कि हमारे कार्य से दूसरे को कष्ट न हो—मेरा भी कल्याण दूसरे का भी कल्याण। हां इस श्रेणी के व्यक्ति जिन्हे 'मनुष्य कहा गया है देवताओं की तरह दूसरों को सुख पहुंचाने के लिये अपने को कष्ट में नहीं डालते।

तीसरी श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो दूसरों को दुख पहुंचाने के लिये व दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिये, अपना खुद का नुकसान करने में भी परहेज़ नहीं करते। ऐसे लोगों को असुर कहा गया है।

आगे उन सन्त ने कहा— देवता बनना आसान नहीं पर हम मनुष्य बनें और असुर कभी न बने।

मनुष्य कैसे बने?– आदमी दुनियां के कामों को करते हुए अपने जीवन को दीन–दुखियों की सेवा में लगाए, मानवता के हर एक काम को करते हुए गौरव अनुभव करें। ईश्वर महान–दयालु है, इस लिए सच्चा ईश्वर भक्त बनने के लिये हर रोज कुछ न कुछ दया का काम करना चाहिए। जब आदमी दया–क्षमा–प्यार–नम्रता आदि गुणों से अपने जीवन को भर लेता है, तब मन शान्ति से भर जाता है और इस प्रकार मानव को अनुभव होता है कि जीवन का हर पल संगीत की तरह आनन्दमय बन गया है। परोपकार ईश्वर–भक्ति की ओर ले जाने वाले साधन है।

जिस प्रकार सूरज प्रकाश फैलाकर उष्मा देकर सब का कल्याण कर रहा है,, फूल खुशबू फैला कर सब के मन कों उल्लास से भर देता है, इसी प्रकार हम भी मनुष्य बनकर इन्सानियत फैलाऐं। यही ईश्वर भक्ति है व यही असल कमाई है।

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

Real Goal of Life

Pro. S.P. Puri

- Each soul is potentially divine. The goal is to manifest this divinity within by controlling nature, external and internal. Do this either by work, or worship, or psychic control, or philosophy---by one or more or all of these--and be free. --Vivekananda

- The term 'real goal' implies the existence of an understanding that even though we appear to be planning and working for different things, we do have some ultimate goal in our mind which we are striving to attain. Defining the real goal is of paramount importance, since our entire life and effort are directed towards the attainment of the specified goal. The clarity of the real goal of life as well as the state of mind with which we are disposed, are two very important aspects which play a very profound role for the pursuit of our real goal.

- One has to be philosophic for comprehending the real goal. Philosophy is not luxury of few; it is a necessity for one and all. According to Plato, man is either a philosopher or a fool. Philosophy is a prerequisite for deep understanding of life in a very holistic and thorough manner. The understanding encompasses fundamental questions such as: Who am I? Why are we here? What is the real problem of man-bondage? What is really in the hands of man? Why man is unique? Each of these questions impacts our life profoundly and so requires to be analyzed with all the seriousness. Our conscious and subconscious perceptions affect us greatly. Those who are conscious of them, have the capability of changing them since basically these are their own understanding. Those who are not conscious of them, have no choice but to dance

to their tunes and suffer helplessly. All of us choose a comfort zone and keep on living in it, till we remove these self-imposed boundaries all together. We have the freedom to do all this and that is what the compendium of the knowledge of life--Vedanta is all about.

- The moment we fix an extraneous goal for our self, then that very moment we tacitly accept various fundamental facts of life. When we resolve that our fulfillment lies in some object or achievement yonder, then in effect imply that 'I intrinsically lack something to be fulfilled.' But all these presumptions are totally baseless. In reality, 'that' which constantly manifests as 'I' in our hearts is an infinitely

transcendental, self-effulgent and blissful existence and the means of knowledge of this is deep enquiry and contemplation of the basis of Vedanta—*Sravana* (hearing), *Manana* (contemplation), *Niddidhyasana* (repeated meditation) of Vedanta scriptures, is the proof of the knowledge of Truth of Life. Vedanta not only reveals truth about us but also about the whole perceptible world. Everything that is perceptible is in the realm of time and space and therefore is transient and ephemeral. Thus when we keep an extraneous goal then we simultaneously affirm that I am a limited and lacking person and the world outside is permanent and capable of giving me what I lack. Our life based on these untruths can never give us a feeling of fulfillment and contentment.

- According to the Vedas, there are two distinct types of actions. They are *Preyas* and *Shreyas*. The difference is at the level of "Awareness" motivating each type of action. Whereas, Preyas refer to self-centered actions, Shreyas has a self-less basis for the action performed. Preyas is a way of living life that appeals to the senses. The ideal way of living is based on the true facts of life. The truth is that I am fulfilled since I am of divine origin; thus the world has nothing to offer to me. Action on our part is only meant to help us serve others. This should be our fundamental motivation to render service to others lovingly and selflessly without any expectation of even gratitude. Our service to others should be as natural and effortless as the fragrance of a flower. No feeling of doer ship should ever enter our minds. This is the path of *Shreyas*—good, to all about. Holding our heads high, with loving hearts and enthusiasm, work on selflessly for the good of all around. Love is a virtue that increases on giving. On the contrary, the path of *Preyas*—pleasant, is one of the dubious untruths. We may get the object of our enjoyment and temporarily feel fulfilled bur soon enough we will realize that there has been a fundamental error. While treading the path of Shreyas, if we are awake all the time, then alone we will never stumble and get hurt. So let us exercise our unblemished judgment in treading a path of Shreyas which may appear to be slightly painful in the beginning but finally this path alone is the way to real fulfillment.
- In this world of many, he who sees the One, in this ever-changing world, he who sees Him, who never changes, as the Soul of his own soul, as his own Self, he is free, he is blessed, he has reached the goal.

Ph. 0172-2691442

*****

पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।

न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

*****

रावण के बुत का बढ़ती हुई उंचाई यह बता रही है कि कैसे बुराई से हमें अधिक से अधिक प्रेम हो रहा है। बुराई हमारे मनोरंजन का प्रतिक बनती जा रही है। बुराई में मनोरंजन ढूंढने की आदत बन रही है इस कविता में बहुत सुन्दर ढंग से बताया है

सारे जमाने ने एक बार फिर पुतला जलाया,
रावण बनाने में तन, मन, धन लगाया।
पहले रावण इतना महंगा नहीं बनता था,
साधारण वेश-भूषा में ही वह जलता था।
पर समय के साथ त्यौहार भी बदलते जा रहे हैं,
बुराई के प्रतीक में भी मनोरंजन ला रहे हैं।

उच-नीच, भले बुरे का भेद ऐसे ही मिटेगा,
देख लेना अगली सदी तक रावण ही फैशन में दिखेगा।
इसलिए रावण का कद हर दशहरे पर बढ़ता जा रहा है।
बुराई का प्रतिक गगन चुंभी तरक्की पा रहा।

राम वर्षों से पुरानी वेश-भूषा और कद में ही दिखते हैं,
आज की पीढ़ी इस भेद को देख कर यही सीखते हैं।
कि, जमाना बुराई को तरक्की दिलाता है,
राम 6 और रावण साठ फुट का बनाता है।

इसलिए जय भले ही राम की बोले पर हीरो तो रावण है,
नवयुवक के भटकाव का सबसे बड़ा यह कारण है।
जो जैसा था वैसा हमने मानना छोड़ दिया,
बुराई के प्रतीक को भी मनोरंजन से जोड़ दिया।

इसलिए रावण बुराई के प्रतीक रूप में नहीं जलता है,
मनोरंजन का साधन बना ये मेरे मन को खलता है।
प्रदर्शन ने दर्शन को लुप्त कर बदल दी दिशा,
दिन के प्रकाश को ज्यूं मिटा दे आकर निशा।

आगे आने वाली पीढ़ी सब कुछ उल्टा ही समझेगी,
अच्छाई और बुराई के भेद को ही तोड़ेगी।
इसलिए उद्देश्य समझकर पर्वों को मनाना जरूरी है,
वर्ना पर्वों की सार्थकता ही अधूरी है।

प्रकाश आर्य
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

*****

उंचाईयां हासिल करने के लिये व्यवहार में नम्रता होनी चाहिये

- एक बार अमेरिका के राष्टरपपि जार्ज वाशिंगटन नगर की सैर पर निकले। रास्ते में एक जगह भवन निर्माण का कार्य चल रहा था। वह वहां रुक गये और बहुत रूची से भवन निर्माण का कार्य देखने लगे। उस समय आज की तरह मशीने नहीं हुआ करती थी और हाथ से ही कार्य हुआ करता था। उन्होने देखा कि वहां लगे मजदूर एक बहुत बड़े पत्थर को हटाने में लगे हैं पर वह भारी होने के कारण हिल नहीं रहा था ।
- ठेकेदार उन मजदूरो को पत्थर न उठा पाने के कारण लगातार डांटे जा रहा था पर खुद उठ कर उनकी सहायता नहीं कर रहा था। वाशिंगटन यह देखकर उस ठेकेदार से बोले------इन मजदूरों की मदद करो। मेरी समझ में यदि इनके साथ एक आदमी और हो तो पत्थर उठ जायेगा। ठेकेदार वाशिंगटन को पहचान नहीं पाया और रौब से बोला---मैं दूसरों से काम लेने वाला हूं, मैं मजदूर नहीं जो कि मजदूर का काम करू।

- यह सुनकर वाशिंगटन अपने घोड़े से उतरे और उन मजदूरों की पत्थर उठाने में सहायता करने लगे। कुछ देर बाद पत्थर उठ गया। उन्होने मजदूरों से विदा ली और वापिस धेड़े पर आकर बैठ गये और ठेकेदार को देखते हुये बोले----सलाम ठेकेदार साहिब, भविष्य में यदि आपको कभी एक व्यक्ति की कमी लगे तो राष्टपति भवन आकर जार्ज वाशिंगटन को याद कर लेना, मैं हाजिर हो जाउंगा।
- यह सुनते ही ठेकेदार सत्बध रह गया और भागकर अपने दुर्व्यवहार के लिये क्षमा मांगी। तब वाशिंटन बोले-----मेहनत करने से कोई छोटा नहीं हो जाता। जब आप संवेदनशील हो जाते हैं और आपका नजरिया मजदूरों के प्रति सहानूभूति वाला होता है तो आप उनका सम्मान हासिल करोगे। जीवन में उचाईयां हासिल करने के लिये नम्रता का होना बहुत जरूरी है।
- एक ऐसी ही कहानी स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से है । स्वामी जी के एक शिष्य का नाम सदानन्द था। वह बुद्धिमान होने के साथ बहुत मेहनती था, जिस कारण ज्ञान के मामले में वह दूसरे शिष्यों से कहीं आगे था। परन्तु उसे आहिस्ता आहिस्ता अंहकार घेरने लगा। उसके व्यवहार में भी अहंकार दिखने लगा। वह हर किसी को नीचा दिखाने की कोशिश करता । अपने साथ शिक्षा प्राप्त कर रहे शिष्यों से दूरी बना कर रखता। स्वामी श्रद्धानन्द को इस बात का अहसास होने लगा। एक दिन स्वामी श्रद्धानन्द पास से गुजरे तो सदानन्द ने उन्हें भी अनदेखा कर दिया। उनका अभिवादन तक न किया। स्वामी श्रद्धानन्द समझ गये कि अंहकार ने सदानंद को बुरी तरह जकड़ लिया है। उसको सही रास्ता दिखाना बहुत जरूरी है।
- अगले ही दिन स्वामी श्रद्धानन्द ने सदानन्द को बुलाया और कहा कि कल तुम मेरे साथ चलोगे। सुवह होते ही वे दोनो जंगल की और चल पड़े। वहां जा कर स्वामी श्रद्धानन्द उसे एक झरने के पास ले गये और उस से पूछा— सदानन्द तुम सामने क्या देख रहे हों। सदानन्द बोला गुरू देव सामने झरना है जिस में पानी उपर से नीचे बह रहा है और गिरने के बाद दुगने वेग से उपर उठ रहा है।
- स्वामी जी बोले यही बात हमारे जीवन की है। यदि जीवन में उंचा उठना चाहते हो तो इस झरने के इस पानी की तरह पहले झुकना सिखो। जितना झुकोगे उतने ही वेग से इस झरने की तरह उपर उठोगे। मैं तुम्हें एक खास मकस्द से यहां लाया था। शायद अब तक तुम समझ गयें होगें । झुकने का अर्थ है अपने व्यवहार में विनम्रता लाना।

*****

जरूरतमन्द को हुनर सिखाना धन की सहायता से कहीं अच्छा है।

नारायण के पिता एक नामी जोहरी थे। पूरा परिवार बड़े आराम से जीवन यापन कर रहा था, कि अचानक एक दिन उसके पिता का देहान्त हो गया। नारायण बहुत छोटा था और इस लायक नहीं था कि अपने पिता का काम धन्धा सम्भाल सके। पिता के जाने के बाद परिवार एक दम टूट गया। धीरे धीरे परिवार पर कर्ज का बोझ बड़ने लगा। ऐसे में मां ने नीलम का हार देकर नारायण को उसके चाचा के पास भेजा जो कि स्वयं एक जोहरी था और कहला भेजा कि उस हार को बेच कर पैसे दे दें ताकि घर का खर्च चल पड़े।

नरायण वह हार लेकर चाचा के पास पहुंचा। चाचा ने हार को अच्छी तरह परख कर कहा, बेटा अपनी मां से कहना अभी बाजार बहुत मंदा है। इसे रूक कर बेचोंगे तो अच्छे दाम मिल जायेंगे। नारायण को थोड़े से पैसे देकर बोले, कल से तुम मेरी दुकान पर काम करने क्यों नहीं आ जाते? इससे तुम्हारे परिवार की कुछ मदद हो जायेगी।

अगले दिन से नारायण अपने चाचा की दुकान पर नियमित जाने लगा और हीरों और रत्नों की परख का काम सीखने लगा। दो तीन साल में ह ीवह बहुत अच्छा पारखी बन गया। अब लोग दूर दूर से रतना, हीरों की परख के लिये उसके पास आने लगे। उसपर का सारा कर्ज भी अदा हो गया और उसको खासी कमाई भी होने लगी। एक दिल उसके चाचा ने कहा कि अपनी मां से कहना कि वह हार बेचने को दे दे क्योंकि अब बाजार तेंज है, उसके अच्दे पैसे मिल जायेंगे। मो ने नारायण को हार दिया तो उसने सोचा कि क्यों न इसे बेचने से पहले परख लिया जाये। नारायण ने परखा तो पाया कि हार तो नकली है। वह उसे घर में ही छोड़ कर दुकान आ गया। एक दो दिन बाद चाचा ने पूछा ---कयों हार नहीं बेचना ?

नरायण बोला-----मैने उस हार को देखा वह तो नकली है। तब चाचा बाले जब तुम पहली बार हार लेकर आये थे तभी मुझे पता लग गया था कि हार नकली है। लेकिन अगर यह सच्चाई मैं तुम्हे उस समय ही बता देता तो शायद तुम सब सोचते कि आज बुरा वक्त आया तो चाचा हमारी चीज को नकली बता कर सहायता नहीं करना चाहते, लेकिन मैं यह भी जानता था कि आपके परिवार को पैसों की सख्त आवश्यकता हैं इसलिये मैने हार न लेकर तुम जैसे हीरे को तराशना कहीं अच्छा समझा। और आज देखों तुम उस हार से कहीं अधिक कीमती बन गये हो।

*****

आर्य समाज केवल हवन नहीं था
आज के आर्य समाजियों को ही यह जानना होगा

कृष्ण चन्द्र गर्ग

हिन्दू विधवा स्त्री के पुनर्विवाह के विरुद्ध थे। सन 1856 में पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की कोशिश से अंग्रेज सरकार ने विधवा विवाह एक्ट बना दिया जिससे विधवा स्त्री के पुनर्विवाह को मान्यता मिल गई। यहां यह बताना बहुत आवश्यक है कि हिन्दु धर्म की बुराईयों को दूर करने में अंग्रेज सरकार का बहुत सहयोग रहा। परन्तु पण्डितों के विरोध के चलते यह कानून व्यवहार में न आ सका। बाद में जब आर्य समाज ने इस काम को अपने हाथ में लिया तभी विधवा विवाह का प्रचलन हुआ।

हिन्दू अपनी छोटी उमर की लड़कियों की शादी बड़ी उमर के आदमियों के साथ कर देते थे। आर्य समाज के प्रतिष्ठित नेता श्री हरविलास शारदा के प्रयास से सन 1929 में अंग्रेज सरकार ने इसके विरुद्ध कानून बना दिया जिसका नाम है – Child marriage restraint Act। तब उसका विरोध तिलक जैसे महानुभाव ने भी किया था। युक्ति थी ईसाई सरकार को हमारे धर्म में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है।

हिन्दू समाज में पति के मरने पर पत्नी को पति के साथ ही जीवित ही जला देने की कुप्रथा थी जिसे सतीप्रथा कहते हैं। राजा राजगोहन राय के प्रयत्न से अंग्रेज सरकार ने सन 1828 में इसके विरुद्ध कानून बनाया। बाद में आर्य समाज ने इसे हाथ में लिया और दृढ़ता से इसका पालन किया और करवाया।

जन्म की जातपात तोड़कर विवाह को वैधता देने वाला जो कानून है वह आर्य समाज के बड़े नेता श्री घनश्याम सिंह गुप्त के प्रयास से अंग्रेज सरकार ने सन 1937 में बनाया था। उस एक्ट का नाम Arya Marriage Validation Act है। महर्षि दयानन्द ने जन्म की जातपात और छुआछूत को पूरी तरह नकारा था।

8. सत्यार्थप्रकाश – महर्षि दयानन्द ने एक अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' दिया। उसमें जन्म से मृत्यु तक मनुष्य को क्या–क्या करना चाहिए और कैसे जीना चाहिए सब ज्ञान वेदों के अनुकूल दिया गया है, संसार में व्याप्त सभी पंथों (मजहबों) के गुण–दोष बता कर सभी को सचेत किया गया है, वेद के सार्वकालिक और सार्वभौमिक मानव धर्म पर प्रकाश डाला गया है और ईश्वर के सच्चे स्वरूप का वर्णन किया गया है। 'सत्यार्थप्रकाश' में 377 ग्रन्थों के सन्दर्भ हैं और 1542 वेद मन्त्रों और श्लोकों के उदाहरण हैं। "सत्यार्थप्रकाश' को पढ़कर लाखों लोग पाखण्ड, अन्धविश्वास, अज्ञान से निकल कर सत्य के प्रकाश का आनन्द लेने लगे हैं।

पाखण्ड और अन्धविश्वास पर चोट – महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य आर्यों ने मूर्तिपूजा, ग्रह, फलित ज्योतिष, भूत–प्रेत, तागा–ताबीज, जादू–टोना आदि पाखण्ड और अन्धविश्वास पर तगड़ी चोट मारी। इन्हें अज्ञानता से पैदा हुई गलत धारणाएं बताया। ईश्वर का सच्चा स्वरूप बताकर मूर्तिपूजा को हानिकर बताया। मनुष्य के सुख–दुख का कारण ग्रह नहीं। ग्रह तो जड़ हैं। वे किसी का भला या बुरा नहीं कर सकते। सुख–दुख का कारण मनुष्य के अपने अच्छे–बुरे काम हैं। उन कामों के फल स्वरूप ही मनुष्य को सुख–दुख होता है। फलित ज्योतिष ;ेजतवसवहलद्ध का वेदों में या किसी भी वैदिक ग्रन्थ में कहीं कोई नामो–निशान नहीं है। ये सारी बातें साधारण लोगों को ठगने के साधन मात्र हैं। जो पहले था और अब नहीं रहा उसे भूत कहते हैं जैसे बीते समय का नाम भूतकाल है। किसी व्यक्ति के मरने पर मृतक शरीर का नाम प्रेत है। तागा–ताबीज, जादू–टोना आदि भी धूर्तों के द्वारा पैदा किए हुए टोटके हैं।

आज सोचना यह है कि आज जब कि समाजिक समस्याऐ कई गुणा बड़ी है हम आर्य समाजों में इनके अन्मुलन के लिये क्या कर रहें है।

'सत्यार्थप्रकाश' के सम्बन्ध में वीर सावरकर ने कहा था – "हिन्दुओं की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।"

*****

फोनः 0172.4010679

क्या इस लिये अमेरिका जाने के सपने देखतें हैं?

बात अमेरिका में पोंटलैंड ओरेगोन अभी घटी है। गाड़ी में एक सफेद अमेरिकन और ऐशिया महाद्वीप से सम्बन्ध रखने वाली दो लडकियां एक ही डिब्बे में सफर कर रही थी। वह सफेद अमेरिकन बहुत वदतमीजी से उन लड़कियों से पेश आया। लड़कियों ने जब विरोद्ध किया तो बोला कि यह सब ठीक नहीं लगता तो अमेरिका छ़ाड़कर चले जाओ। वहां पर बैठे तीन श्वेत उन अमेरिकन दोनो लड़कियों के बचाब में उठे तो जिस सफेद अमेरिकन ने बदतमीजि की थी उस ने अपना खंजर निकाला दो को तो मार दिया और तीसरे को बहुत बुरी तरह जख्मी कर दिया।

हां यह सच्चाई है कि आज अमेरिका में जो बाहर से गये लोग है बहुत ही असुरक्षित महसूस कर रहें है। कारण रंग भेद भाव नहीं पर असली कारण है कि बाहर से आये लोगों ने अपनी मेहनत से सम्मपनता के मामले में स्थानिय लोगों को कहीं पीछे छोड़ दिया है जो कि स्थानिय लोगों के लिये असहनिय हो गया है, जिस कारण हिंसा वाली बातें रोज की बात बन गई है।

गौतम अधिकारी जो की टाइमज ओफ इंडिया के साथ जुड़े हुये है उनका कहना था कि जब वह 20वी सदी के आखिर में अमेरिकां आये थे तो जीवन बहुत सुखी महसूस होता था पर आज जीवन के सब भौतिक सुख होने के बावजूद भी भय रहता है। यह भय और असुरक्षा ही जीवन को नरक बना देती है। इसलिये यदि आप भारत में अच्छे बसे हुये हैं अच्छा कमा रहें हैं तो अमेरिका की न सोंचे। आने वाला समय इस से भी अधिक खराब हो सकता है । कारण , स्थानिय लोग जो कि अक्सर परिश्रम नहीं कर सकते और बैठ कर खाने के आदि हैं , बाहर से आयें जोगों की तरक्की को सहन नहीं कर सकते ।

यह सच्चाई है कि भारतिय मूल के लोग चुप है और खुल कर बात नहीं कर रहे क्योंकि उनके लिये भारत में पुन बसना इतना आसान नहीं पर इस में दो राय नहीं कि वे भयभीत व चिन्तित है।

*****

Things a break-Up Teaches You

Break ups may seem like the toughest times ever, but in hindsight, they teach you more about love and life than anything else in the world. Yes, they're difficult to deal with but slowly you start accepting. They prepare you for so many important things in life. Here's what you can learn from your break-up!

1. Life can never be planned. Just when you think you're settled, something goes wrong and your whole life turns upside down. Always remember that unpredictability is the essence of life and there's no escaping that. Hence don't waste your time and money on fortune tellers. They can't predict about their own future so it is stupid to rely upon what they tell.
2. There's nobody you cannot live without. You may miss them; life may be different or even difficult without them but not impossible. Life moves on, always. Sit calmly and think about the people in your life without whom life looked meaningless-your parents, some of your blood relations, they departed when time came. You wept and cried but after some time accepted your life without them.
3. Relations do not always remain same. People change evolve and sometimes, they become complete strangers all of a sudden. Think about the persons who were your buddy and bosom friends, today they may be strangers or even if they meet it is not more than few words of acquaintance. They grew up to be someone you never thought they would.
4. There's no better company than yourself. A break-up teaches you to stop constantly seeking others' attention and support. It teaches you to be okay with being alone, and rather, enjoy it.

*****

दिपावली मनाने का उदेश्य रामराज्य जैसे राज्य के लिये प्रार्थना

जैसा कि आप सभी ने जान लिया होगा, इस बार अमेरिका के वाईट हाउस जो कि वहां के राष्टपति का निवास स्थान है, वहां पर भी दिपावली आधे घंटे के लिये मनाई गई। इस की सब से सुन्दर बात यह थी कि जो वहां अमेरिका में रहने वाले एक सम्माननिय हिन्दु शलभ कुमार ने दिपावली का जो संदेश राष्टपति टरम्प को दिया वह हमारे हिन्दुस्तान में रहने वाले 90 प्रतिशत हिन्दू भी शायद नहीं जानते।

समारोह के दौरान राष्टपति टरम्प के पूछे जाने पर कि यह त्योहार हिन्दु लोग क्यों मनाते हैं, शलभ कुमार ने उन्हें बताया------हम हिन्दु दिवाली इस लिये मनाते हैं क्योंकि इस दिन भगवान राम दसयु राजा रावण, जिसने की भारत वर्ष में आतंक मचाया हुआ था, उस को मार कर वापिस लौटे थे। उनके स्वागत में दिपावली मनाई जाती है। और दस हजार साल से भी पहले से इस दिन हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि भारत में राम राज्य आ जाये। राम राज्य का अर्थ है अच्छाई का राज्य। ऐसा राज्य था जिसमें धर्म सब से उपर था। हर व्यक्ति को न्याय मिलता था। और राज्य में कोई भूखा नहीं था, सब में भाईचारा था।

आज हिन्दुओं के सभी त्योहार में मनोरंजन इस कदर हावी हो गया है कि हम त्योहार की धार्मिक प्रासंगिकता से बिल्कुल दूर हो गये हैं। होली हुई तो रंग फैंक लिये या मटका फोड़ दिया जैसे खेल देख लिये या मथुरा की होली जैसे नृत्य देख लिये, दिपावली हुई तो जमकर खरीददारी कर ली, तोहफो की अदला बदली कर ली, घर सजा लिया, आतिशवाजी चला दी, दफतरों में स्कूलो विद्यालयों में मौज मस्ती के कारण एक दिन की जगह चार दिन का अवकाश हो गया। हां धार्मिक कर्मकाण्ड के नाम पर लक्ष्मी पूजन कर लिया । आप बाकी समुदायों में देखेंगे कि धार्मिक पर्वो पर वे मस्चिद, चर्च, गुरूद्वारे मे परिवार सहित जाकर बहुत श्रद्धा व शालिनता से प्रार्थना करते है, पर्व के अर्थ को समझते है , नमाज पढ़ते है जि समे कि उनके घर का छोटे से छोटा सदस्य भी शामिल होता है।

हम हिन्दु भी इस बात पर विचार करें और मनोरंजन को धार्मिक पूजा पाठ से अलग करें। पूजा के लिये तो मन पूरी तरह ईश्वर में लगा होना चाहिये। तभी हमारे बच्चे भी हिन्दु धर्म में गर्व महसूस करेंगे। जो प्रश्न राष्टपति टरम्प ने किया मैं नहीं समझता हमारे 70 प्रतिषत बच्चे भी इस का उतर दे पायें।

*****

Guru comes first

The late Nani Palkhivala, once recalling a meeting in New York that was attended by Indian political dignitaries and swamis, said: 'C Subramanian prefaced his talk by mentioning the swamis first and the Vice-President later. He explained for the benefit of the Western audience that according to our ancient culture, the man of God came first and the man who had attained worldly distinction came later!' The likes of Ram Rahim are bringing disrepute to the name of 'guru'. Vivekananda had observed: 'Shall India die? Then from the world all spirituality will be extinct, all moral perfection will be extinct.

Palkhivala: three great mistakes

कारण जाने बिना कभी राय न बनायें,

एक डाक्टर को अस्पताल में ज़रूरी ओपरेशन के लिये बुलाया गया। वह कुछ देर से पहुंचा। जिस बच्चे का ओपरेशन होना था उसका पिता बहुत टैंशन मे कमरे में तेज़ी से चक्कर लगा रहा था। जैसे ही उस ने डाक्टर को देखा वह क्रोद्ध में डाक्टर से बोला ——" आपने आने में इतनी देर क्यों लगा दी? क्या आप देख नही सकते मेरे बच्चे की जिन्दगी खतरे में है? यह है आपकी जिम्मेवारी की भावना?

डाक्टर मुस्करा दिया और बोला——" मैं क्षमा चाहता हूं, मैं अस्पताल में नहीं था। जैसे ही मुझे सूचना मिली मैं भागा चला आया। अब आप शान्त हो जाइये और मुझे काम करने दीजिये।

"आप मुझे शान्त रहने को कह रहें हैं। मैं पूछता हूं कि अगर आप का अपना बेटा ऐसी हालत में होता तो क्या आप शान्त रहते?" वह सज्जन फिर चिल्ला कर बोले।

डाक्टर फिर मुस्करा दिया और बोला–" आदमी का शरीर पंच तत्वों से बनता है व पंच तत्वो में ही लीन हो जाता है। जीवन देने वाला ईश्वर है, डाक्टर नहीं। जाईये अपने बेटे के लिये प्रार्थना किजिये, मैं उस ईश्वर की कृपा से पूरी कोशिश करूगां।"

"दूसरों को उपदेश देना बड़ा आसान है, अगर अपना बच्चा इस हालत में होता तो देखता कितने उपदेश देता" वह व्यक्ति अपने में बुड़बुड़ाया।

ओपरेशन कुछ घंटे तक चला उसके बाद डाक्टर उस व्यक्ति के पास आया व चेहरे पर खुशी व सन्तोष के साथ बोला—" भगवान का बहुत धन्यवाद! आपका लड़का बच गया है आपको कुछ पूछना है तो नर्स से पूछ लिजीये।" व उस व्यक्ति के उतर का इन्तज़ार किये बिना तेजी से बाहर निकल गया।

"यह डाक्टर इतना अंहकारी क्यों है? क्या मेरे बच्चे की हालत के बारे में मेरे प्रश्नों का जवाब देने के लिये कुछ समय रूक नहीं सकता था" वह पास में खड़ी नर्स को बोला

नर्स की आखों में आंसू बह रहे थे वह रोते हुये उस व्यक्ति से बोली——" इस डाक्टर का बेटा कल ही एक सड़क दुर्घटना में मारा गया। आज वह उसके अन्तिम संस्कार के लिये श्मशान भूमी में था जब हमने आपके बच्चे के ओपरेशन के लिये इसे टेलीफोन किया। वह अब फिर श्मशान भूमी उसके संस्कार को पूरा करने गया है।

कारण जाने बिना कभी राय न बनायें, हो सकता है आपको प्श्चाताप करना पड़े

*****

Why sucide when this *Manush chola* is not easy to get

Sucide rate amongst students is on the increase. Gurbani emphasises the concept of *mann jitiya, jag jitiya*, which holds good for all. All students cannot clear entrance exams. If one fails, he/she should be taught to face the realities of life with examples of great men. The story of King Bruce and the spider is significant even now. It is not necessary that everyone should be a doctor! Society needs all kinds of people, all kinds of skills.

He learns most who feels he knows nothing

Once, a man keen to learn music approached a master and after showing his intent asked his fees. The master told him that he would charge 100 Coins. The man thought for a while, then made a supplication, "Master, I already have some knowledge of music so will it not be possible for you to reduce your fee?" The Master gave a piercing glance and then said, "If that is the case then it will be 200 Coins" Perplexed, the seeker said, "Don't you think, it is irrational. A man who knows nothing is charged 100 Coins and the one who already knows something has to pay 200 Coins"

The master smiled and said, "To me, the one who knows nothing is better than who knows something because first I will have to spend time to erase out what he knows. Only then my tutorage can be of help to him."

This reminds me of similar incident from the life of Maharishi Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj. When he approached his Guru Swami Virjanand for his tutorage, the latter asked him to throw all the books that he had in to river Ganga only then he'd teach him.

Knowledge is knowledge, irrespective of the source, then why the new Guru should expect the disciple to forget what he knew already. I got the answer when I read the story of a Professor who went to a Jain sage to seek spiritual knowledge. Prof. engaged the sage in a lengthy introduction about himself and his achievements. The Sage who had other devotees in audience, asked one of his disciples to get tea for the Professor. The sage with his gaze fixed on the Professor started pouring tea in to the cup and soon it was full and tea started overflowing. Professor thought that the sage was unmindful of his action so he immediately drew his attention. Sage just laughed and then spoke, "Look, as it is not possible to put more tea in a cup which is full to the brim. Likewise, it is not possible to teach a disciple who claims to know much."

Crux is, no one expects you to erase from your mind what you have already acquired or happen to know but when you go to a Master to learn some thing new then you must have a feeling that you know very little only then you will be able to learn new things.

Malvika Sood

*****

Albert Einstein had said,

All religions, arts and sciences are branches of the same tree.
Any intelligent fool can make things bigger and more complex...
It takes a touch of genius – and a lot of courage to move in the opposite direction.
A man should look for what is, and not for what he thinks should be.
In the middle of difficulty lies opportunity

सुख दुखः का कारण - लगाव

उर्वशी गोयल

लोगों में यह आम धारणा पाई जाती है कि वैराग्य का तात्पर्य एक कार्यशील जीवन से अलग होकर जीवन में भौतिक सुख देने वाली सभी वस्तुओं का त्याग है। परन्तु यह धारणा सत्य से कोसों दूर है। भौतिक सुख एक साधारण व्यक्ति के लिये बहुत आवश्यक हैं। वैराग्य की प्रवृति तो जीवन को कार्यशील रखते हुयें भौतिक सुख को भोगते हुये भी बनाई जा सकती है। साथ ही यह भी ज़रूरी नहीं कि जिसने सब कुछ त्याग दिया है, वह सही मायने में वैरागी बन गया है। हो सकता है उसका मन आम व्यक्ति की तरह मोह, राग व द्वेश से लिप्त हो।

वैराग्य का मतलब संसार के प्रति उदासीनता बिल्कुल नहीं है। उदासीनता का अर्थ तो यह है कि हम अपने माता–पिता, बच्चों, समाज, देश, सगे सम्बन्धियों व प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्यों से विमुख हों जायें। ऐसा वैराग्य किस काम का जो कि एक जीवित व्यक्ति को मृतक के समान बना दे। व्यक्ति केवल सांस लेने या पेट भरने के लिये ही तो नहीं जी रहा है। जीवन तभी जीवन है यदि हम दूसरे प्राणियों के साथ, एक दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा करते हुये, एक दूसरे के सुख–दुख बांटते हुये जीयें। सही अर्थो में वैराग्य योग द्वारा मन की वृतियों का निरोध अर्थात् नियन्त्रण करना है। योगश्चित्तवृतिनिरोधः, इस योग दर्शन के सूत्र के अनुसार जब आप अपने को चित की वृतियों से अलग कर लेते हैं तो अपने स्वरूप में स्थित हो जाते हैं, यही वैराग्य है। यह चित्त की वृतियां आप सब के साथ रहते हुए भी नियन्त्रण में कर सकते हो। उदाहरण के लिये मैने यह निश्चय कर लिया कि सिर्फ एक समय खाना खाऊंगी या दो घटें मौन धारण करूंगी, यह सब तो समाज में रहते हुये भी कर सकते हैं। महात्मा गांधी स्वतन्त्रता संग्राम के इतने बड़े अन्दोलन का नेतृत्व करते हुये भी यह सब कर रहे थे। महर्षि दयानंद सरस्वती योगी के रूप में समाज मे नवचेतना का कार्य करते रहे। इसलिये वैराग्य का मतलब संसार के प्रति उदासीनता बिल्कुल नहीं है।

गुरू ग्रंथ साहब में आता हैः

नानक सतिगुरी भेटिए पूरी होवे जुगकत।

हसदिआं खेलंदिआ पैनदिआ

खावंदिआ विच होवे मुकति।।

इस संसार में अपने–अपने कर्तव्य को करते हुये ही मनुष्य मोक्ष के द्वार तक पहुचं सकता है। उसे संसार से अलग होने की ज़रूरत नहीं।

सही मायने में वैरागी वही है जिस कां मन स्थिर हो गया है अर्थात् जब मन सफलता– असफला, मान–अपमान, लाभ–हानि व सुख–दुखः में एक जैसा रहें। न तो सफलता में बहुत खुश हो और न ही असफलता में दुखी, वह हर हाल में अपना मांनसिक संतुलन बनाये रखने में सक्षम हो गया है। किसी व्यकित या वस्तु से लगाव ही हमारे दुखः का कारण बनता है।

एक वृद्ध औरत अमृतसर में पुराने भीड़ वाले शहर में रहती थी। पति का देहान्त हो गया था व बेटा ही व्यापार को देखता था। देखते ही देखते बेटे के बच्चे भी बड़े ही गये व बड़ी कक्षाओं में पढ़ रहे थे। मकान छोटा पड़ने लगा। बेटे ने वह मकान बेचकर नई आबादी में बड़ा मकान लेने का मन बनाया। जब मां को पता लगा तब उसके दुखः की कोई सीमा न थी। वह सोच भी न सकती थी कि जिस मकान में उसने 50 वर्ष काटे थे, वह उसके लिये बेगाना हो जायेगा। वह बीमार पड़ गई। बेटे ने जब मां की हालत को देखा तो अपना निर्णय बदलना ही उचित समझा परन्तु मां की हालत में फर्क न पड़ा। एक दिन एक हमउमर

सहेली उसकी बीमारी के बारे में सुनकर उससे मिलने आई। सहेली को बात समझने में देर न लगी। सहेली ने उससे पूछा कि जब उसके पति का मृत्यु हुई थी तो उनकी क्या आयु थी? उसने कहा कि यही कोई 70 साल। फिर उसने प्रश्न किया कि जब उसके सास ससुर की मृत्यु हुई थी तो उनकी आयु क्या थी, उसने फिर जवाव दिया यही कोई 70–75 साल के करीब। अब उसकी सहेली बोली, "देख लाजवन्ती, जिन्होंने यह मकान बनाया था वे भी यहीं छोड़कर चले गये तो एक बात पक्की है। जब आजकल में तेरी आखें बन्द होगी तब तू भी इस मकान को यहीं छोड़ जायेगी। फिर काहे को इसके साथ इतना लगाव करना। मुझे ही देख, पांच साल पहले तेरे सामने ही मकान बेच कर नई आवादी में चली गई थी, पहले कुछ अटपटा लगा पर बाद मे सब कुछ पहले की अपेक्षा अच्छा लगने लगा। खुला मकान है, साफ हवा पानी, मैं बहुत खुश हूं। कल ही बड़े लड़के का फोन कैनेडा से आया था कि सब काम हो गया है, अब उसके पास कुछ समय रह कर आऊंगी। न जाने फिर कब मानव का चोला मिले। किसी चीज से भी लगाव क्यों करना?

सहेली की बात उस वृद्धा को समझ में आ गई और एक हफ्ते में ही तंदरूस्त हो गई व उसने स्वयं लड़के से नई आवादी में चलने को कहा। ऐसा है वस्तु से लगाव का दुखः। और जब हम लगाव से स्वतन्त्र हो गये तो लाजवन्ती की सहेली की तरह सुख ही सुख है।

एक और बात, लगाव के साथ ही अधिकार के भाव का उदय होना है। मेरा घर, मेरा परिवार तथा मेरे धन की भावना दृढ़ होने लगती है। इस प्रकार के अधिकार की भावना हमारे अन्दर अहंकार को पैदा करती है। यह अहंकार फिर आपके विचारों, कार्यो व इच्छाओं को प्रभावित करता है। उस के बाद स्वाभाविक तौर पर इन सभी वस्तुओं को जिन्हें मेरा–मेरा कहते जीभ नहीं थकती, खोने का भय सताने लगता है। ऐसे में आप अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं और यह लगाव आप को वस्तुओं के मालिक होने पर भी उन वस्तुओं का गुलाम बना देता है। परन्तु एक वैराग्यवान व्यक्ति हर एक चीज़ का उचित आनन्द तो लेता है पर उसका गुलाम नहीं बनता।

*****

महर्षि दयानन्द महान व्यक्तियों की दृष्टी में

कांग्रेस अध्यक्ष पट्टाभिसीता रमैया ने अपनी पुस्तक 'स्वतन्त्रता का इतिहास' में लिखा है कि स्वतन्त्रता अन्दोलन में 85 प्रतिशत आर्य थे।

पट्टाभिसीता रमैया ने महर्षि दयानन्द को राष्ट्र पितामह बताया था जबकि गांधी जी को राष्ट्रपिता। जो जो कार्य गान्धी जी ने अपनाए वे सब उससे पचास साल पहले महर्षि दयानन्द ने आरम्भ किए थे - उदाहरण - स्वदेशी, खादी और ग्रामोद्योग, अछूत उद्धार, महिला उत्थान, गो संरक्षण आदि। महर्षि ने बीज बोया और गान्धी जी ने फसल काटी।

डा. एनी बीसैंट एक अंग्रेज औरत थी जिसने भारत की स्वतन्त्रता के लिए काम किया। उसने कहा था - "When the Swaraj Temple is built there will be images of the leaders of the freedom movement and that of Swami Dayanand will be the tallest." अर्थ - जब स्वराज का मन्दिर बनेगा, उसमें स्वतन्त्रता अन्दोलन के नेताओं के चित्र (बुत) लगेंगे और उनमें स्वामी दयानन्द का चित्र (बुत) सबसे बड़ा होगा।

मोती लाल नेहरू ने जेलों में घूमने के बाद गान्धी जी को जो रिपोर्ट दी थी उसमें कहा गया था कि जेलों में 80 प्रतिशत आर्य समाज के लोग हैं।

लाला लाजपत राय ने कहा था - आर्य समाज कट्टर राष्ट्रीयता में विश्वास रखता है।

5. महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रेरित होकर स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, पण्डित लेखराम, पण्डित गुरुदत्त, लाला लाजपत राय, भगतसिंह के दादा अर्जुन सिंह, पिता किशन सिंह, चाचा अजीत सिंह आदि कितने सज्जन समाज और राष्ट्र की सेवा में उतरे।

स्वामी श्रद्धानन्द, जिनका नाम पहले मुंशी राम था, ईसाईयत की ओर झुक रहे थे। महर्षि दयानन्द के साथ मुलाकात के बाद पक्के आर्य और राष्ट्रभक्त बन गए। लाला लाजपत राय इस्लाम की तरफ झुके हुए थे। वे आर्यों की संगति से आर्य बने और देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ते हुए शहीद हुए।

मौलवी महबूब अली जिला बागवत बड़ौत के पास बरवाला में बड़ी मस्जिद के इमाम थे। महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर वे इस्लाम को छोड़कर आर्य बन गए। अब वे महेन्द्रपाल आर्य के नाम से वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

*****

अकारण नहीं है स्वर्ग और नरक की कल्पना

सीताराम गुप्ता

मनुष्य की कल्पनाओं में ईश्वर और स्वर्ग–नरक की कल्पना सबसे रोचक और महत्त्वपूर्ण है। प्रायः सभी धर्मो में स्वर्ग की कल्पना कमोबेश एक ख़ूबसूरत उद्यान के रूप में मिलती है जहाँ ऐशो–आराम की सभी चीज़ें मौजूद हैं। इस स्वर्गोद्यान में कलकल कर बहते झरने और नहरें हैं तो इन झरनों और नहरों के किनारे बनी क्यारियों में महकते हैं रंग–बिरंगे, सुगंधित तथा मनमोहक व आकर्षक फूल। यहाँ चारों ओर लगे हैं ख़ूबसूरत पेड़ जो सदैव स्वादिष्ट और रसीले फलों से लदे रहते हैं। इसी स्वर्गोद्यान में अपसराएँ हैं, परियाँ हैं, हूरें हैं तथा और भी न जाने क्या–क्या है जिसे मनुष्य की कल्पना ने यहाँ सँजोया है। यदि आप इस स्वर्ग को देखना चाहें या वहाँ स्थाई रूप से निवास करना चाहें तो वह भी संभव है लेकिन मात्र मृत्यु के उपरांत।

प्रश्न उठता है कि हम जिस स्वर्ग की खोज में रहते हैं वह स्वर्ग कहाँ है? क्या वह इस धरती पर ही स्थित है अथवा हमारी दृष्टि से परे कहीं अन्यत्र? क्या स्वर्ग का संबंध मृत्यु से है? क्या इस भौतिक देह का अवसान ही मृत्यु है? मृत्यु वास्तव में क्या है? वह कौन सी मृत्यु है जिससे स्वर्ग की प्राप्ति संभव है? ईसा कहते हैं, "मैं बार–बार यही कहूँगा कि जब तक मनुष्य दोबारा जन्म नहीं लेगा वह ईश्वर का साम्राज्य नहीं देख पाएगा।" अर्थात् पुनर्जन्म ही स्वर्ग का द्वार है। स्वर्ग के लिए अनिवार्य है मृत्यु। लेकिन किसकी मृत्यु?

इस भौतिक देह की मृत्यु या इस भौतिक देह के अंदर व्याप्त मन में समाए नकारात्मक घातक विचारों की मृत्यु? जहाँ तक भौतिक देह की मृत्यु अथवा देहावसान के बाद स्वर्ग या नरक की प्राप्ति की बात है वह बेमानी है क्योंकि इस शरीर के नष्ट हो जाने के बाद स्वर्ग या नरक की अनुभूति को बतलाने के लिए कोई उपाय नहीं। ईसा जब कहते हैं कि मनुष्य जब तक दोबारा जन्म नहीं लेगा वह ईश्वर का साम्राज्य नहीं देख पाएगा तो उनके कहने का तात्पर्य भौतिक देह के पुनर्जन्म से नहीं अपितु नकारात्मक घातक विचारों की मृत्य के उपरांत मन में सात्त्विक भावों की सृष्टि से ही है।

जब तक हम नकारात्मक घातक विचारों से भरे रहते हैं हम अधिभौतिक, अधिदैविक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार की व्याधियों से पीड़ित रहते हैं और यही जीते जी का नरक है। मन की उचित कंडीशनिंग अर्थात् मन में व्याप्त नकारात्मक घातक विचारों से मुक्ति ही स्वर्ग का सोपान है। मन की मृत्यु अर्थात् मन पर पूर्ण नियंत्रण द्वारा ही मन में सकारात्मक विचारों अथवा भावों की स्थापना संभव है। यही वास्तविक मृत्यु अथवा पुनर्जन्म है। मन में सकारात्मक भावों की सृष्टि ही स्वर्ग की सृष्टि है।

एक कथा याद आ रही है। एक व्यक्ति था तो थोड़ा धार्मिक प्रवृति का लेकिन अत्यंत अहंकारी भी। उसकी इच्छा थी कि इस जन्म में चाहे जो करना पड़े लेकिन मरने के बाद स्वर्ग अवश्य मिले इसलिए अनेकानेक संत–महात्माओं के पास जाता और उनकी सेवा कर स्वर्ग जाने का उपाय पूछता। लोग जैसा बताते वैसा करता। ग़रीबों की सेवा करता और दान–दक्षिणा देता। वह अपनी कमाई का अधिकांश भाग परोपकार में ही लगा देता था क्योंकि उसे उम्मीद थी कि ऐसा करने से स्वर्ग की प्राप्ति निश्चित है। लेकिन जैसे–जैसे उसकी परोपकार की भावना का विकास हो रहा था वैसे ही उसमें अहंकार की भावना भी बढ़ती ही जा रही थी। उसकी दानशीलता पर कोई

टीका टिप्पणी कर देता तो उसके क्रोध की सीमा न रहती।

एक बार एक प्रसिद्ध संत उसके घर के पास आकर रुके तो वह फौरन उनकी सेवा में उपस्थित हो गया और उनसे भी स्वर्ग जाने का उपाय पूछा। साथ ही अपने स्वर्ग जाने की प्रयासों की चर्चा भी उनसे की। संत ने उस व्यक्ति को ध्यानपूर्वक ऊपर से नीचे तक देखा और उपेक्षा से कहा "तुम स्वर्ग जाओगे? तुम तो किसी नीच कुल के व्यक्ति दिखलाई पड़ रहे हो। तुम परोपकारी या दानी व्यक्ति नहीं कोई व्यापारी या धर्म के ठेकेदार ज़्यादा लग रहे हो।" इतना सुनते ही वह व्यक्ति क्रोध से भर उठा और संत को मारने के लिए डंडा उठा लिया। संत ने मुस्कराते हुए पूछा, "तुम में तो तनिक भी धैर्य नहीं। इतनी अधीरता और अहंकार के होते हुए तुम स्वर्ग कैसे जा पाओगे?"

व्यक्ति को संत की कही हुई बातों का मर्म समझ में आया तो वह संत के चरणों में गिरकर अपनी गलती के लिए क्षमा मांगने लगा। आगे से क्रोध न करने तथा अहंकार वृत्ति के त्याग का भी प्रण किया। "यही है स्वर्ग का उपाय है," संत ने कहा। "एक–एक कर सब अवगुणों से मुक्त हो जाओ। जिस दिन विकारों से मुक्त हो जाओगे उसी दिन स्वर्ग की सृष्टि हो जाएगी और यहीं पर हो जाएगी।"

वास्तव में स्वर्ग की प्राप्ति तभी संभव है जब इस जीवन में अच्छे–अच्छे कर्म किए जाएँ। अब अच्छे कर्मों से क्या तात्पर्य है? वास्तव में कर्म की उत्पत्ति भाव या विचार से होती है। जैसे हमारे भाव या विचार होंगे वैसे ही कर्म होंगे। जिस प्रकार हम सुंदर पेड़–पौधे और फल–फूल उगाकर इस धरती पर स्वर्ग की रचना करने में सक्षम होते हैं उसी प्रकार मन में सकारात्मक भावों की सृश्टि द्वारा हम जीते जी स्वर्ग की रचना ही तो करते हैं। वास्तविक स्वर्ग तो हमारे मन में होता है। हम इस जीवन में अच्छे कर्म करें तथा अनुशासित रहें जिससे न केवल हम अपितु पूरा समाज लाभांवित हो सके इसीलिए एक काल्पनिक स्वर्ग की रचना की गई है।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034
फोन नं. 011–27313679 / 9555622323
Email : srgupta54@yahoo.co.in

*****

अतिषय लोभ ही है हानि और दुख का कारण

आशा गुप्ता,

एक बार एक व्यक्ति ने एक फाइनांस कंपनी खोली और लोगों से कहा कि वह हर महीने उनकी रक़म दोगुनी करके वापस देगा। उसने लोगों के सिर्फ सौ–सौ रुपये जमा किये और एक महीने बाद सबको दो सौ–दो सौ रुपये लौटा दिये। इसके बाद उसने लोगों के सिर्फ एक–एक हज़ार रुपये जमा किये और एक महीने बाद सबको दो–दो हज़ार रुपये लौटा दिये। इससे कंपनी पर लोगों का ऐसा विश्वास जम गया कि लोग बैग भर–भर कर रुपये लाने लगे। कुछ ही दिनों में कई सौ करोड़ रुपये इकट्ठे हो गए और वही हुआ जो होता आया है। कंपनी बंद और फाइनांसर ग़ायब।

अभी हाल ही में एक और निवेश कंपनी लोगों के तीन सौ करोड़ रुपये लेकर चंपत हो गई। कंपनी ने अपने निवेशकों को विश्वास दिलाया कि वे डेढ़ साल में उनकी रक़म सत्ताइस से सौ गुना तक बढ़ा कर देंगे लेकिन कंपनी के निर्देशक निवेशकों को सब्ज़बाग़ दिखाकर तीन सौ करोड़ रुपये एकत्र कर रातों रात ग़ायब हो गए। ऐसा नहीं है कि ये पहली बार हुआ है पहले भी ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति होती रही है बस रूप बदल जाता है। कभी कोई एक महीने में रक़म दोगुनी करने का वादा करता है तो कोई बाज़ार भाव से आधे पैसों में सामान देने का विश्वास दिलाता है। लेकिन क्या ये संभव है? हर्गिज़ नहीं।

इस खुली प्रतियोगिता के ज़माने में कोई कंपनी

इतना लाभ कैसे कमा सकती है कि वो अपने निवेशकों के धन को हर महीने दोगुना कर दे? फिर भी लोग इन घटनाओं से सबक़ क्यों नहीं लेते? क्यों बार–बार अपनी ख़ून–पसीने की गाढ़ी कमाई इस प्रकार के लुटेरों के हाथों में सौंप देने को विवश हो जाते हैं? इसका प्रमुख कारण है हमारी अतिशय लोभवृति जिसके कारण हम न तो कॉमन सेंस का इस्तेमाल करते हैं और न पुरानी घटनाओं से सीख ही लेते हैं।

एक पुरानी घटना याद आ रही है। हर साल की तरह उस साल भी गाँव में ठठेरे आए और गलियों में घूम–घूम कर आवाज़ें लगाने लगे, "टूटे–फूटे बर्तन सँवरवा लो, बर्तनों पर कलई करा लो।" लोग भी इंतज़ार में थे कि ठठेरे आएँ और पीतल–ताँबे के टूटे–फूटे बर्तनों की मरम्मत हो। घरों से टूटे–फूटे बर्तन बाहर निकलने लगे और होने लगा मोल–भाव। जो काम पहले दस रुपये में होता था उस काम के लिए ये नये ठठेरे सिर्फ पाँच रुपये मांग रहे थे ये जानकर लोग खुश थे लेकिन फिर भी मोल–भाव हो रहा था।

ठठेरों ने दस रुपये की बजाय पाँच रुपये माँगे तो भी किसी ने कहा कि तीन रुपये से ज़्यादा न देंगे। फिर भी ठठेरों ने मना नहीं किया। ठठेरे जो जितना कहता मान लेते और भाग–भाग कर बर्तन जमा करने लगे। देखते–देखते बर्तनों का अंबार लग गया। धीरे–धीरे सांझ घिर आई। ठठेरे अपना खाना बनाने का जुगाड़ करने में लग गए और लोगों से कहा कि कल सुबह भट्ठी चालू करके बर्तनों की मरम्मत का काम शुरू करेंगे।

लोग बर्तन देकर अपने–अपने कामों में लग गए। जो लोग उस समय घरों में नहीं थे घर आने पर उन्होंने जब ये सुना कि इतने सस्ते में बर्तन मरम्मत हो रहे हैं तो वो भी अपने–अपने बर्तन लेकर ठठेरों के रुकने के स्थान पर पहुँचे। वहाँ जाकर देखा तो पाया कि न तो ठठेरे ही वहाँ मौजूद थे और न बर्तन ही रखे थे। अब लोगों की समझ में आया कि वो इतने कम दामों में बर्तन सँवारने के लिए क्यों तैयार हो गए थे। लेकिन अब क्या हो सकता था?

जहाँ भी हम लोभ या मुफ्त–लाभवृत्ति के वशीभूत हो जाते हैं वहाँ ऐसा ही होता है। ऐसा होना स्वाभाविक है। लेकिन सोचिए कि कोई किसी को मुफ्त में या बहुत कम क़ीमत में कोई चीज़ या सेवा कैसे उपलब्ध करा सकता है? क्या आप सामान्य अवस्था में ऐसा कर सकते हैं? नहीं न? तो कोई भी कैसे ऐसा कर सकता है और यदि कोई ऐसा करने का दिखावा करता है तो वह बहुत महँगा पड़ता है। अतः हानि और दुख से बचने के लिए लोभ का त्याग करना ही श्रेयस्कर है।

लालच बुरी बला है लेकिन हम लालच के वशीभूत होकर एक असंभव बात को भी नकार नहीं पाते। लोभ हमारी आँखों पर मोटा परदा डाल देता है। मोटे ब्याज के लालच में मूलधन से भी हाथ धो बैठते हैं। लोभ की यही परिणति होती है। लालचवश पहले तो ग़लत या अस्वाभाविक बात का विरोध नहीं कर पाते और जब भारी नुक़सान हो जाता है तो विरोध करना संभव नहीं होता क्योंकि इससे हम स्वयं उपहास के पात्र बन जाते हैं। अख़बार रोज़ विभिन्न नटवर लालों के कारनामों से भरे रहते हैं लेकिन हम नहीं चेतते। हमारी लोभवृत्ति के कारण ही रोज़ कोई न कोई नया अशोक जडेजा या सुभाश अग्रवाल पैदा हो जाता है।

कभी हम पैसा दुगना–तिगुना कराने के फेर में तो कभी ज़ेवर बढ़वाने के चक्कर में लुट–पिटकर बैठ जाते हैं। कभी चिटफंड कंपनियाँ घोटाले करती हैं तो कभी प्लांटेशन कंपनियाँ। पिछले दशक में प्लांटेशन कंपनियों ने भी निवेशकों को कम चूना नहीं लगाया। निवेशक ही नहीं ठगने वाले भी कम घाटे में नहीं रहते। आज तक कोई नटवर लाल कानून के शिकंजे से बचा नहीं है फिर भी नये लोग इस धंधे में आ जाने का कारण उनकी भी अतिशय लोभवृत्ति ही है।

हम लोभ के दुष्चक्र में फँसकर डूब न जाएँ इसके लिए अत्यंत सावधान रहने की ज़रूरत है। और इसके लिए ज़रूरी है कि हम सामान्य बुद्धि का प्रयोग करते हुए ग़लत चीज़ का शुरू से ही विरोध करें और उससे दूर रहें। यदि हम छोटे–मोटे लालच में नहीं पड़ेंगे तो सदा के लिए बड़े धोखों और नुक़सान से बचे रहेंगे।

लोभवृत्ति ही नहीं अपितु मुफ्त–लाभवृत्ति, आत्मप्रशंसा तथा ख़ुशामद कराने की आदत, अहंकार, प्रकृति के नियमों के विरुद्ध जाना ऐसी आदतें हैं जो एक दिन हमारे पतन का कारण बनती हैं। अतिशय लोभ की प्रवृति से बचकर ही हम इन दुर्गुणों से बचे रहकर सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

*****

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें

पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English

कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता

हमदर्द, डबार,

वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी,

कामधेनु जल व अन्य

आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,

GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL

& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh

Tel.: 0172-2708497

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

जिस घर मे समाज मे, संघटन में या घर में बजुर्ग नहीं वह अधुरा है, जो बजुर्ग धर्म की बात न बताये, वह बजुर्ग अधुरा है, जिय धर्म में सत्य नहीं वह धर्म किसी काम का नही।।

धर्म के चार सतम्भ है।

पहला---सत्य,

दूसरा---न्याय,

तीसरा--दान,

चौथा--तप

स्वामी वेदानन्द सरस्वती, उतराकाशी

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

प्रकाश द्वारा उन्धकार को मिटाने वाले ऋषी दयानन्द

- डॉ. महेश विद्यालंकार

तमसो मा ज्योतिर्गमय अन्धकार पर प्रकाश की विजय का प्रेरक पर्व दीवाली, ऋषि की स्मृति का भी दिवस है। इसी दिन उस महामानव ने अपना भौतिक शरीर छोड़ा था। जाते-जाते संसार को सत्य के प्रकाश की दीवाली दे गया। पुण्यात्मा ऋषि दयानन्द सत्य के पुजारी थे। सत्य के लिए जिए और सत्य पर ही शहीद हो गए। उन्हें सत्यपथ से कोई विचलित नहीं कर सका। सत्य की रक्षा के लिए चौदह बार जहर पीया। उनका संकल्प था - "सत्यं वदिष्यामि" सत्य ही मानूंगा और सत्य ही बोलूंगा। उन्होंने सत्य के विरुद्ध कभी समझौता नहीं किया। ऐसे प्रभु के वरद पुत्र दयानन्द की अमर गौरव गाथा स्मरण करने की पुण्य तिथि है- दीवाली।

ऋषिवर! तुम्हें कोटि-कोटि स्मरण और प्रणाम। तुम्हारी मंगलमयी स्मृति को अनेकशः नमन और श्रद्धांजलि। तुम्हें संसार से विदा हुए 134वां वर्ष व्यतीत हो रहा है। तुम्हारे नाम और स्मरण से हृदय श्रद्धा-भक्ति से भर उठता है। नेत्र सजल होकर तुम्हारे उपकारों को याद करते है। तुमने न जाने कितने पतितों, भूले-भटकों आदि का उद्धार किया। तुम आजीवन विषपायी बनकर संसार को अमृत लुटाते रहे। ऋषि तुम धन्य थे। तुम्हारा महान इतिहास प्रशंसनीय है। तुम्हारे उपकार वन्दनीय हैं। तुम्हारा तप-त्याग तथा बलिदान स्मरणीय है। तुम्हारा व्यक्तित्व एवं कृतित्व अर्चनीय है। तुम सबसे निराले थे। तुम्हारे सारे कार्य भी निराले थे। जो भी तुम्हारे सम्पर्क में आया, वह अमूल्य हीरा बन गया। तुम्हारे अन्दर अद्‌भुत दैवीय चुम्बकीय शक्ति थी। शत्रु भी चरणों में नत-मस्तक होकर गया। ऋषिवर! तुम क्या थे? यह आज तक संसार न जान सका। सदियों के बाद भारतमाता की पीड़ा को समझने वाला और उसके आंसुओं को पोंछने वाला कोई महामानव था - तो ऋषिवर तुम्हीं थे। तुमने अपने लिए जीवन भर कुछ न मांगा, न संग्रह किया, न मठ-मन्दिर आदि बनाए। जीवन भर जहर पीते रहे, अपमान सहते गए, पत्थर खाते रहे। भूली-भटकी मानव जाति में फैले अज्ञान, अन्धकार, ढोंग आदि को दूर करने के लिये संघर्ष करते रहे।, रात रात जागकर करुण-क्रन्दन करते रहे-

"एक हूक सी दिल में उठती है,
एक दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठकर रोते हैं,
जब सारा आलम सोता है।"

ओ! दया और आनन्द के भण्डार! मानवता के अमर नायक! देश, धर्म, संस्कृति, यज्ञ, वेद आदि के उद्धारक! आज तुम्हें क्या श्रद्धांजलि दूं? आसुंओं के सिवा कुछ पास नहीं है। हमने तुम्हारे स्वरूप, योगदान, महत्व एवं विशेषताओं को समझा ही नहीं। तुम्हें जाना ही नहीं। तुम्हारे उपकारों को स्वीकारा ही नहीं, तुमने सारे जीवन में कहीं भी चारित्रिक दुर्बलता, पद, प्रतिष्ठा, लोभ आदि नहीं आने दिया। जीवन में दैवीय और चमत्कारी रूप नहीं आने दिया। मानव बनकर ही रहे। ऋषि के कट्टर विरोधी और आलोचक भी अन्दर से उनके प्रशंसक थे। तराजू के एक पलड़े पर ऋषि को और दूसरे पलड़े पर संसार के सभी महापुरुषों को रख दिया जाए, तो निश्चय ही ऋषि का पलड़ा भारी होगा। क्योंकि वह मुक्तात्मा प्रभु की इच्छा पूर्ति के लिए आई थी। अपनी कोई इच्छा नहीं थी। जैसे समस्त पर्वतों में हिमालय की अलग पहचान है। ऐसे ही समस्त महापुरुषों में ऋषिवर तुम्हारी अलग आन-मान-शान और पहचान है। तुम्हारा अब जीवन भी प्रेरक था, तुम्हारी मृत्यु भी प्रेरक थी। जाते-जाते भी नास्तिक गुरुदत को आस्तिक बनाकर, वैदिक धर्म का दीवाना दे गए। तुम्हारे जीवन की एक-एक घटना में अपार प्रेरणा भरी हुई है। तुम्हारे ग्रन्थों की एक-एक पंक्ति में नवजीवन का अमर सन्देश भरा हुआ है। घनघोर अमावस्या की रात में संसार को ज्ञान और प्रकाश की दीपावली दे गए हो। इसी सत्य ज्ञान और प्रकाश को प्रचारित एवं प्रकाशित करने के लिए तुमने 'आर्य समाज' बनाया था। वह तुम्हारे बाद खूब फला-फूला और बडा।

जीवन तथा जगत के प्रत्येक क्षेत्र में आर्य समाज के विचारों, सिद्धान्तों तथा आदर्शों को सराहा गया। अलग पहचान बनी। ऋषिवर! तुम्हारे दर्द और उद्‌देश्य को जिन्होंने समझा, वे दीवाने, पागल और जुनून वाले होकर निकल पड़े। उनकी करनी-कथनी एक थी। उनका जीवन और सोच-विचार तुम्हारे से अनुप्राणित था। उसी का परिणाम रहा-संस्था, संगठन, अनुयायी आदि की दृष्टि से आर्य समाज सब में आगे रहा है। अतीत का जितना भी गुणगान व प्रशंसा की जाए थोड़ी है। आर्यों! ऋषि निर्वाणोत्सव पर शान्त भाव से सच्चाई को समझकर जीवन, जगत और आर्य समाज के लिए सोच सकें। कुछ कर्तव्य, सेवा, त्याग, सहयोग आदि की भावना जगा सकें। कुछ अपने को बदल सके। ऋषि की पीड़ा को समझ सकें। कुछ दिशा-बोध ले सकें। मिशन के लिए समय, शक्ति व सोच लगा सकें। स्वार्थ, पद, अहंकार, लोभ, लाभ आदि से उपर उठकर स्वयं पद-त्याग कर सकें। अपने जीवन घर और आर्य समाज को सम्भाल सकें। तो हम सच्चे अर्थ में ऋषिवर को श्रद्धांजलि देने के हकदार हैं। तभी ऋषि की जय बोलने की सार्थकता है।

*****

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Web builder Co. With Children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह धार्मिक साथी 50 प्रति माह

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

मधुकर कौड़ा लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Aruna Chaudhary

Diwakar Negi

Hardyal mahajan

Mahesh

Mrs and Mr Narinder Gupta

Mrs and Mr Navneet

Sarla Mata Ji

Namta Gupta

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in